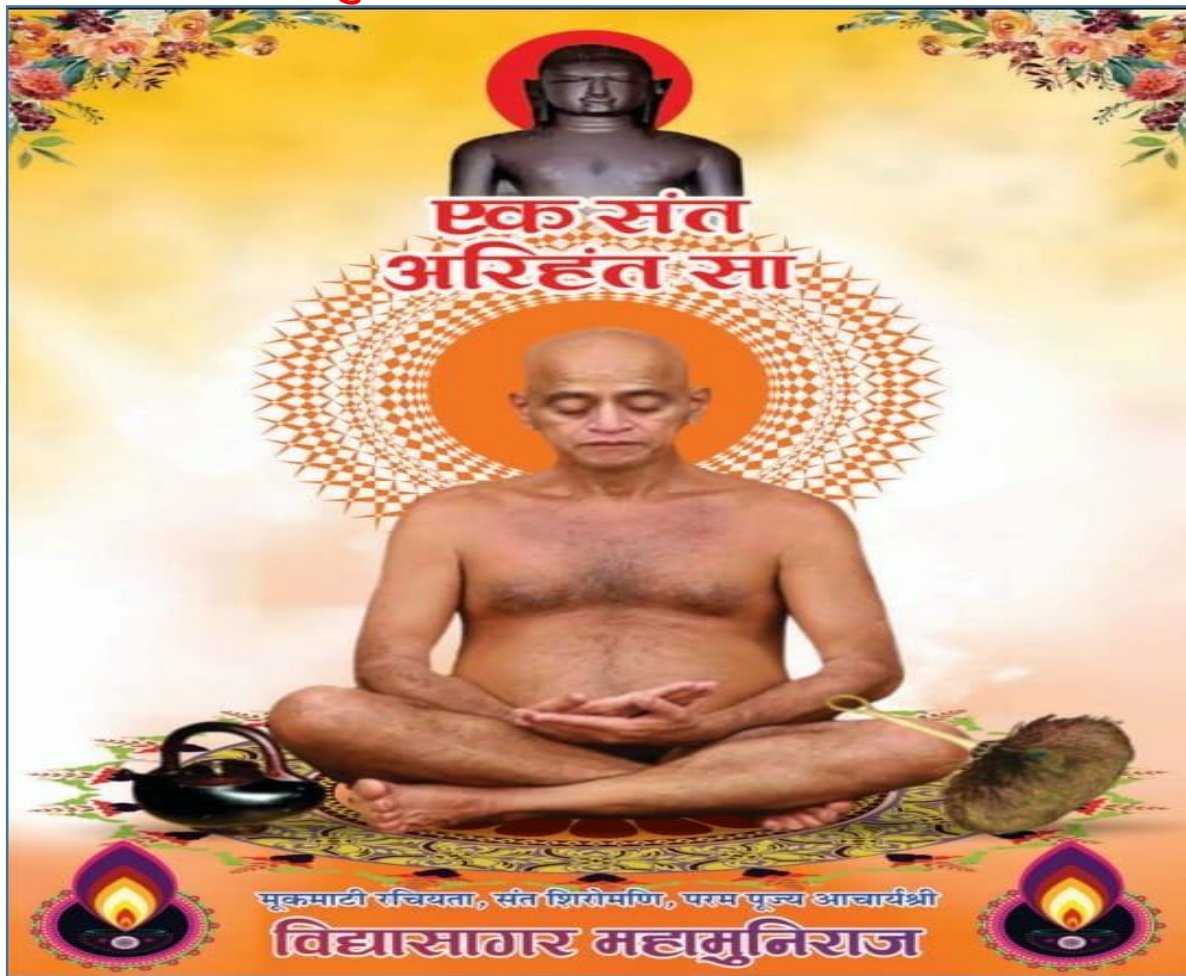


आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन शोध पीठ के प्रेरणा स्त्रोत-



पूज्य आचार्य विद्यासागर महाराज का परिचय -

भारतभू पर सुधारस की वर्षा करने वाले अनेक महापुरुष, सन्त और कवि जन्म ले चुके हैं, जिन्होंने ज्ञान रूपी आलोक से अपनी साधना द्वारा सारे विश्व को आलोकित किया है तथा विघटित समाज को एक नवीन संबल प्रदान किया है। जीवन में आस्था और विश्वास, चरित्र और निर्मल ज्ञान तथा अहिंसा एव जीव-दया की भावना को बल देने वाले इन महापुरूषों, साधकों, संतों एवं कवियों के क्रम में, वर्तमान में, दिगम्बर जैनाचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज शिखर पर थे, जो अपनी ओजपूर्ण और माधुर्यपूर्ण वाणी में ऋजुता, भावों में समता, जीने में संयम की त्रिवेणी के जीवन्त चरित्र थे। आश्विन शरदपूर्णिमा संवत् 2003 तदनुसार 10 अक्टूबर 1946 को कर्नाटक प्रांत के बेलग्राम जिले के सुप्रसिद्ध सदलगा ग्राम में श्रेष्ठी श्री मल्लप्पाजी अष्टगे एवं माता श्रीमंती के घर जन्म लिया। आपके बाल्यावस्था का नाम विद्याधर था। बचपन से ही वैराग्य की भावना आपके हृदय में विद्यमान थी। 20 वर्ष की उम्र में ही आप को संसार की असारता, जीवन के रहस्य और साधना के महत्व का पता चल गया था और गुरुवर श्री ज्ञानसागर जी महाराज से आषाढ़ शुक्ल पंचमी, वि.सं. 2025, रविवार, 30 जून 1968 ईस्वी को लगभग 22 वर्ष की उम्र में दिगम्बर दीक्षा धारण की। और उनका मुनि अवस्था का नाम मुनि श्री विद्यासागर जी महाराज रखा

गया। आपकी गुरू सेवा अद्वितीय रही इसलिए आचार्य ज्ञानसागर महाराज ने संलेखना से पहले अपना आचार्य पद त्याग कर आपको प्रदान किया।

आचार्य विद्यासागर महाराज ने भारत की नई शिक्षा नीति के निर्माण में महनीय योगदान है उनकी प्रेरणा से वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने मातृभाषा में शिक्षा जगत में तकनीकी एवं मेडिकल आदि की पुस्तकों के निर्माण में करते हुए विशेष निर्देश दिया। आचार्य श्री ने नारी शिक्षा, जीवदया और स्वावलंबन पर जोर दिया और उनकी प्रेरणा से समाज द्वारा नारी शिक्षा के लिए 'प्रतिभास्थली' शिक्षा केन्द्रों की स्थापना जबलपुर, रामटेक, ललितपुर, इंदौर, चंद्रगिरी (डोंगरगढ) आदि स्थानों पर की गयी।

देश के विकास में प्रत्येक व्यक्ति का योगदान हो इसलिए उन्होंने श्रम आधारित शिक्षा पर बल देते हुए 'हथकरघा' शिक्षा केन्द्रों की स्थापना की गयी। जीव दया, गौ-संरक्षण के लिए उनकी प्रेरणा से गौशालाओं का संचालन अनेक स्थानों पर हो रहा है। आचार्य श्री का भारतीय साहित्य के लिए अतुलनीय योगदान है। इनके द्वारा मूकमाटी, चैतन्य चंद्रोदय काव्यम्, श्रमणशतकम्, भावनाशतकम्, निरंजनशतकम्, परीषहजयशतकम्, सुनीतिशतकस् आदि ग्रंथों की रचना की। इस शोध पीठ की स्थापना में इनका मंगलमय आशीर्वाद रहा है।

